पुराणों तथा उपपुराणोंमें श्रीरामकथा

वेदादि शास्त्रोंके उपबृंहण-रूप होनेसे पुराण-वाङ्मयका आयाम बहुत विस्तृत है। इनमें विविध विषयोंका समावेश है तथा विभिन्न देवताओंकी पूजा, उपासना एवं भक्तिका सम्यक् संनिवेश हुआ है। यहाँ पुराणोंमें उपलब्ध भगवान् श्रीरामसे सम्बद्ध कुछ स्थलोंका निर्देश किया जा रहा है।

(१) अग्निपुराणके आरम्भमें अध्याय २ से १२ तकमें रामायण-सार है, फिर अध्याय २४० से २६० तकके अध्यायोंमें भगवान् श्रीरामद्वारा श्रीलक्ष्मणजीसे कही गयी राजनीतिका वर्णन है।

(२) आदिपुराणके भी १२वें तथा अन्य कई अध्यायोंमें विस्तारसे रामकथा आती है।

(३) कल्किपुराणमें रामकथा संक्षेपसे है।

(४) कालिकापुराणके ६२वें अध्यायमें रामकथा बहुत विस्तारसे है। उसे नागेशभट्टने वाल्मीकिरामायण ५। १०८। १० की टीकामें पूर्णतया उद्धृत कर दिया है।

(५) कूर्मपुराणके १। १९—२१ तथा २। ३४वें अध्यायमें संक्षिप्त रामकथा वर्णित है।

(६) गरुडपुराणके अ० १४३ आदिमें अग्निपुराणके ही समान रामायणसारका वर्णन है।

(७) नरसिंहपुराणके ४७ से ५० तकके बड़े-बड़े अध्यायोंमें श्रीरामचरितका विस्तारसे वर्णन किया गया है। इसमें कई विलक्षण बातोंका उल्लेख हुआ है। जैसे रामके वनवासकी वर्षसंख्या १४ के बदले १२ ही है, इसका सौरवर्ष तथा चान्द्रवर्षके भेद एवं कल्पभेदके कथानक-भेदसे समाधान किया जा सकता है।

(८) पद्मपुराणमें रामकथाका बहुत विस्तारसे बार-बार वर्णन हुआ है। इसके सृष्टिखण्डमें अ० १४ तथा ४०से ७० तकमें भगवान्‌की वन-यात्रा, तीर्थयात्रा, पुष्करमें श्राद्धादिका वर्णन है। फिर पूरा पातालखण्ड रामचरित्रमय ही है। इसमें रामाश्वमेधयज्ञका ७० अध्यायोंमें विस्तारसे वर्णन है। फिर श्रीजाम्बवंतद्वारा किसी पूर्वकल्पके भी अद्भुत रामचरित्रका इसके ८९से ९२ तकके अध्यायोंमें वर्णन पाया जाता है। इसके उत्तरखण्डके अध्याय २५४में अष्टोत्तरशत रामनाम तथा इसीके ७१वें अध्यायमें श्रीराम-सहस्रनाम (वासुदेव-सहस्रनाम) का वर्णन है।

(९) बृहन्नारदीयपुराण, पूर्वभागके ७५में तथा अ० ७९। ७—२६ में रामचरित्र है तथा इसमें आयी हुई मार्कण्डेय, ब्रह्मा एवं स्कन्दादि पुराणोंकी सूचियोंमें भी रामचरित्रका उल्लेख है। राममन्त्र-ध्यान, उपासना-विधि भी इसके भागवततन्त्रमें विस्तारसे है।

(१०) बृहद्धर्मपुराणमें श्रीरामचरित्र विस्तारसे प्राप्त होता है, इसका, कालिकापुराणका तथा देवीभागवतका रामचरित्र बहुत अंशोंमें मिलता है।

(११) ब्रह्मपुराण अधिकतर भगवान् रामके ही चरित्रसे भरा पड़ा है। इसके अध्याय ४३में विश्वामित्रजीका चरित्र है। १२३वें अध्यायमें सवा दो सौ श्लोकोंमें विस्तारसे रामचरित्रका वर्णन है। इसमें एक स्थानपर सीता-रक्षणके लिये अङ्गद-हनुमान् आदिद्वारा प्राणत्याग करने तथा एक जगहपर विभीषणद्वारा जगन्नाथजी एवं भगवान् श्रीरामनाथजीकी प्रतिमा प्राप्त करनेकी कथा है। (अध्याय ७०—१७६ तथा अध्याय १५४—१५७ आदि।)

(१२) ब्रह्मवैवर्तपुराणमें भी बार-बार श्रीसीतारामका

चरित्र आया है। कृष्णजन्मखण्डके ६२वें अध्यायमें संक्षेपसे पूरा रामचरित्र आ गया है। इसमें एक जगह शूर्पणखाके पुष्करमें घोर तपस्या करके, अगले जन्ममें कुब्जा होकर, कृष्णरूपमें रामको प्राप्तकर कृतार्थ होनेकी कथा आती है। उस समय वर देते हुए उससे श्रीब्रह्माजीने कहा था—'श्रीराम प्रकृतिसे परे, ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव आदि सबके स्वामी हैं। इस जन्ममें एकनारीव्रत होनेसे उनकी प्राप्ति तुम्हारे लिये सर्वथा असम्भव है। जन्मान्तरमें वे तुम्हें पतिरूपमें प्राप्त हो सकेंगे।'

जन्मान्तरे च भर्तारं प्राप्स्यसि त्वं वरानने।
देहं तत्याज सा वह्नौ सा च कुब्जा बभूव ह।।

(कृ०ज०खं० ६२।५०)

यही कथा अत्यल्प अन्तरसे गर्गसंहिताके मथुराखण्डमें भी आती है। इसमें राजा बहुलाश्वसे देवर्षि नारदने कहा था—

सैव शूर्पणखा नाम राक्षसी कामरूपिणी।।
अभूच्छ्रीमथुरायां तु कुब्जा नाम महामते।

(गर्ग० मथु० ११।१०)

(१३) ब्रह्माण्डपुराण, खण्ड ३।७३ आदिमें भगवान् रामके २४ वें त्रेतामें अवतार लेनेकी कथा आती है।

(१४) भविष्यपुराणमें कई बार रामकथाका उल्लेख आया है। इसके प्रतिसर्गपर्व, अध्याय १५ तथा इसके उत्तरपर्वके ६३वें एवं १६९वें अध्यायोंमें दशावतार-जयन्ती आदिमें रामके व्रतका विधान आदि विस्तारसे निर्दिष्ट है।

(१५—१८) भागवत, देवीभागवत, देवीपुराण और महाभागवतमें भी रामकथा विस्तारसे वर्णित है। भागवत स्कन्ध ५ के अध्याय १९में तथा स्कन्ध ९ के १०—१३ अध्यायोंमें रामकथा है। देवीभागवतके चौथे तथा नवें स्कन्धोंमें तथा देवीपुराणके चौरासीवें अध्यायमें रामकथा है।

(१९) मार्कण्डेयपुराणके अन्तमें विस्तृत रामकथा थी, पर वह नष्ट हो गयी—ऐसा नारदपुराणकी सूचीसे स्पष्ट है।

(२०) लिंगपुराणके ६६ वें अध्यायमें रामकी चर्चा है।

(२१) वामनपुराणमें भी रामचरित्रका उल्लेख प्राप्त होता है। (२२) वायुपुराणके २।२९; ९९।१८३—१९९ में रामचरित्र है। (२३) वाराहपुराणके ४५वें अध्यायमें रामचरित्र है। (२४) विष्णुपुराणके ४थे अंशमें रघुवंशका वर्णन तथा रामचरित्र है। (२५) शिवपुराणके सती (पार्वती) खण्डकी पूरी रामकथा रामचरितमानसके प्रारम्भमें गोस्वामीजीद्वारा अनूदित है। (२६) स्कन्दपुराण, ब्रह्मखण्डके सेतुखण्ड तथा धर्मारण्यखण्ड पूरे-के-पूरे रामचरित्रमय हैं। वैष्णव-खण्डमें भी सम्पूर्ण अयोध्यामाहात्म्य, रामायण-माहात्म्य एवं रामकथाएँ ही हैं। (२७) हरिवंशके अध्याय १।४१ आदिमें राम-चरित्र है।

☆☆☆